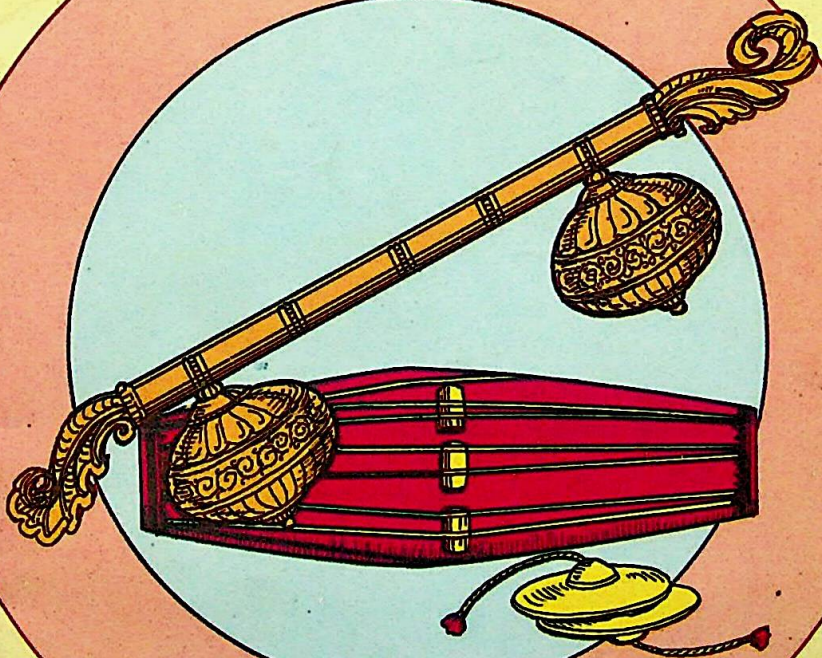


विद्यमान कीर्तन

समूह गान

(भाग-१)

अरीमा दाम



युग-निर्माण-योजना, मथुरा

श्रीराम

समूह गान

भाग-१



पं० श्रीराम शर्मा आचार्य



प्रकाशक :

युग-निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-३

मूल्य ३-०० रुपया

जरूरी है अपना निर्माण



सबसे अधिक जरूरी होता है अपना निर्माण।
 किन्तु स्वयं से लड़ते रहना, काम नहीं आसान॥
 दोष और गुण दोनों का हम में होता है वास।
 दोषों को कर दूर, गुणों का करते रहें विकास।
 देने होंगे आत्म प्रगति के खुद को प्रबल प्रमाण। सबसे०
 छुपाने और छुपाने जैसी बात न रहती शेष।
 अपना सब कुछ देखा करती, अंतः दृष्टि विशेष॥
 धोखे की टटिया को इसमें तनिक नहीं स्थान। सबसे०
 अपने ऊपर अपने हाथों करनी होती चोट।
 बन कठोर खुद ही निकालनी पड़ती अपनी खोट॥
 अपने ही अंदर असुरों को मारे जाते वाण। सबसे०
 किंतु, व्यक्ति निर्माण सभी निर्माणों का आधार।
 क्योंकि व्यक्तियों से ही बनता है समाज-परिवार॥
 व्यक्ति-व्यक्ति की उन्नति से होता समाज-उत्थान। सबसे०
 हम बदलेंगे युग बदलेगा यह है सूत्र महान।
 चलो इसी क्रम से कर लें हम नव युग का निर्माण॥
 बूँद-बूँद से सिंधु बना है, यह है अमिट विधान। सबसे०
 त्याग तपस्या का जीवन जी, करें स्वयं की शोध।
 करना है तो करें स्वयं के दोषों पर ही क्रोध॥
 हुआ व्यक्ति निर्माण अगर तो होगा युग निर्माण।
 किंतु स्वयं से लड़ते रहना, काम नहीं आसान॥

—मंगल विजय

सूरज की आवाज



उठो सुनो प्राची से उगते सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज॥

देश कि जिसने सबसे पहले जीवन ज्योति जलायी।
और ज्ञान की किरणें सारी दुनियाँ में फैलायी॥
लोभ मोह के भ्रम से सारे जग को मुक्त कराया।
भ्रातृ भावना का प्रकाश सारे जग में फैलाया॥

अगणित बार बचाई जिसने मानवता की लाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज॥
इतना प्रेम कि पशु-पक्षी तक प्राणों से भी प्यारे।
इतनी दया कि जीव मात्र सब परिजन सखा हमारे॥
श्रद्धा अपरंपार की पत्थर में भी प्रीति जगाई।
और पराक्रम ऐसा जिसकी, रिपु भी करे बड़ाई॥

उसी प्रेरणा से रच दें, हम फिर से नया समाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज॥
मानवता के लिए हड्डियाँ तक जिनने दे डाली।
माताओं की हुई अनेकों बार गोदियाँ खाली॥
पर न पाप के आगे उनने अपना शीश झुकाया।
संस्कृति का सन्मान बढ़ाने हैंस-हैंस शीश कटाया॥

रहे शिवाजी अर्जुन जैसां निज चरित्र पर नाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज॥

दिया न्याय का साथ भले ही हारे अथवा जीते।
गिद्ध गिलहरी तक न रहे थे परमारथ से पीछे॥
इसी भूमि में वेद पुराणों ने भी शोभा पाई।
जन्म अनेकों बार यहीं लेते आये रघुराई॥

स्वागत करने को नवयुग का नया सजाएँ साज।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज॥

सोये स्वाभिमान को आओ सब मिल पुनः जगाएँ।
नव जागृति के आदर्शों को दुनियाँ में पहुँचाएँ॥
ज्ञान यज्ञ की यह मशाल हर लेगी युग तम सारा।
हम बदलेंगे युग बदलेगा आज लगाएँ नारा॥

सुनो अरे! युग का आवाहन, कर लो प्रभु का काज।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज॥

—बलराम सिंह परिहार

कदम मिलाकर चल



जोश न ठंडा होने पाए कदम मिलाकर चल।
मंजिल तेरे पग चूमेगी आज नहीं तो कल॥
सबकी हिम्मत सबकी ताकत सबकी मेहनत एक।
सबकी इज्जत सबकी दौलत सबकी किस्मत एक॥
बाधाओं को काट-काट कर राह बनाता चल।
मंजिल तेरे पग चूमेगी आज नहीं तो कल॥
भारत माता खोज रही है नये सृजन सेनानी।
देनी होगी हमें देश हित फिर से अब कुरबानी॥
बलिदानों का ढेर लगा इतिहास बदलता चल।
मंजिल तेरे पग चूमेगी आज नहीं तो कल॥
सबका मंदिर सबकी मस्जिद गिरजाघर गुरुद्वारा।
हिंदू मुस्लिम सिक्ख इसाई भारत सब को प्यारा॥
एक-एक से मिलकर बनता संघ शक्ति का बल।
मंजिल तेरी पग चूमेगी आज नहीं तो कल॥

—माया वर्मा

परिवर्तन का महापर्व



परिवर्तन के महापर्व का ज्ञान यज्ञ है आज।
 युग का ब्रह्मा लगा रहा है होताओ ! आवाज॥
 समयदान की सामग्री ले, हों ब्रह्मा के साथ।
 अंशदान की समिधाओं से, रहे न खाली हाथ॥
 सामग्री के बिना न संभव आहुतियाँ होती हैं।
 समिधाओं के बिना न लपटें आसमान छूती हैं॥
 चलो ? सजाएँ हम हविष्य के समिधाओं के साज।
 युग का ब्रह्मा लगा रहा है होताओ ! आवाज॥
 जब तक लोभ-मोह पर अंकुश नहीं लगाया जाता।
 तब तक समय और श्रम साधन कभी न जुटने पाता॥
 चलो ! मनःस्थिति और परिस्थिति को अनुकूल बनाएँ।
 शबरी और गिलहरी जैसी हम भी भेंट चढ़ाएँ॥
 बाधाओं को चीर बड़ें हम, करें राम का काज।
 युग का ब्रह्मा लगा रहा है होताओ ! आवाज॥
 यदि अभाव में ज्ञान यज्ञ से, लपट न उठने पाई।
 तो इतिहास हमें ठहरायेगा, कल उत्तरदायी॥
 यदि दुश्चिंतन, दुष्प्रवृत्तियाँ भस्म न हो पाई तो।
 और आस्था संकट की विपदाएँ घहराई तो॥
 नर-पिशाच होंगे सुर मानव होंगे दुःखी समाज।
 युग का ब्रह्मा लगा रहा है होताओ ! आवाज॥
 प्राणवान होता जो भी हों, सब मिल आगे आएँ।
 ईश्वरीय कार्यों में जितना संभव हाथ बटाएँ॥
 नगर-नगर में ग्राम-ग्राम में पावन ज्योति जलानी।
 साधन समय और श्रम देकर बनें सृजन सेनानी॥

आज देव संस्कृति की फिर से चलो बचाएँ लाज।
युग का ब्रह्मा लगा रहा है होताओ ! आवाज॥

—मंगल विजय

वह जीवन बेकार



त्याग और तप के बल पर ही चलता है संसार।
जहाँ नहीं तप त्याग तनिक भी वह जीवन बेकार॥

लिए उदर में शिशु को जननी तप करती नौ मास।
देकर सार भाग निज तन का करती मनुज विकास॥
जहाँ सृजन है, वहीं त्याग का गूँज रहा जयकार।
जहाँ नहीं तप-त्याग तनिक भी वह जीवन बेकार॥

तप करता किसान खेतों में तप करता मजदूर।
तप से ही बनते वैज्ञानिक, विकसे तुलसी सूर।
दिया जिन्होंने त्याग स्वर्ग-सुख, बने वही अवतार।
जहाँ नहीं तप-त्याग तनिक भी वह जीवन बेकार॥

त्याग अपना रूप बीज ने तभी वृक्ष बन पाया।
तप कर ही तो साधारण लोहा फौलाद कहलाया॥
तप के द्वारा रचा बिधाता ने सारा संसार।
जहाँ नहीं तप-त्याग तनिक भी वह जीवन बेकार॥

आदर्शो हित कष्ट सहन ही बन जाता तप रूप।
सर्वोत्तम उपयोग शक्ति का बनता त्याग अनूप॥
यही यज्ञ के मूल मंत्र हैं, संस्कृति के आधार।
जहाँ नहीं तप त्याग तनिक भी वह जीवन बेकार॥

—डॉ. हरिगोविंद सिंह

मूर्धन्यो-जागो



परिवर्तन के बिना होता विभीषिका का नाश।

मूर्धन्यो जागो औरों से, रही न कोई आश॥

मानव के चिंतन चरित्र में, आज असुरता छाई।
पाप पतन में रस लेने की वृत्ति सभी में आई॥
है अभाव से दुःखी राष्ट्र, जनसंख्या बढ़ती जाती।
अणु युद्धों की होड़ लग रही मानवता अकुलाती।
प्रकृति क्षुब्ध हो उठी आज फिर, सहा न जाता त्रास।
मूर्धन्यो जागो औरों से, रही न कोई आश॥

ऋतु बसंत आने से पहले, पतझर हो जाती है।
नव शिशु को पाने से पहले, माँ पीड़ा पाती है॥
नये भवन के लिए पुराने खंडहर ढाये जाते।
ढाए खंडहर की छाती पर, नए उठाए जाते॥
चंद्रगुप्त चाणक्य बदलते इसी तरह इतिहास।
मूर्धन्यो जागो औरों से रही न कोई आश॥

अवतारों की परंपरा है, परिवर्तन लाने को।
दिव्य चेतना धारण करती, इस मानव बाने को॥
परिवर्तन हो गया जरूरी, युग की पीड़ा हरने।
प्रज्ञा का अवतार हो रहा, नई चेतना भरने॥
हम भी शिवा समर्थ सरीखा भरें नया विश्वास।
मूर्धन्यो जागो औरों से रही न कोई आश॥

जन मानस के दृष्टिकोण को, फिर बदला जाना है।
परशुराम का और बुद्ध का क्रम फिर दुहराना है॥

मानव में देवत्व उदय कर, धरती स्वर्ग बनाना।
 मानवता को पाप पतन से, अब है मुक्त कराना॥
 रहे नहीं अब खिन्न मनुजता, मानव नहीं उदास।
 मूर्धन्यो जागो औरों से रही न कोई आश॥

—भंगल विजय

क्रांति मशाल जलायी



युग ऋषि ने युग का तम हरने क्रांति मशाल जलाई।
 दृढ़ता की परिचायक इसको थामे सबल कलाई॥

एक बार भर दिया प्राण रस, इसमें ऋषि ने अपना।
 रहे प्रकाशित यह सदैव, देखा है ऐसा सपना॥
 यह युग व्यापी अंधकार तब, ही तो मिट पाएगा।
 गौरव वह प्रकाश का फिर से, जग में जग जाएगा॥
 तुम्हीं इसे प्रज्ज्वलित रखोगे ऐसी आश लगाई। दृढ़ता की०

याद रहे युग-युग तक इसका, स्नेह न चुकने पाए।
 भले हमारे रक्त कोष की बूँद-बूँद चुक जाए॥
 हृदय न हो संकीर्ण, अंश अपना देते रहने में।
 प्राण न सकुचाए जग में अपना प्रकाश भरने में॥
 युगों-युगों तक यह जगती में फैलाए अरुणाई॥ दृढ़ता की०

संकल्पों की निष्ठा इसको, थामे सदा रहेगी।
 तम का अंतिम संस्कार कर जय की कथा कहेगी॥
 ऊँचा सदा रहेगा हाथ न, नीचे कभी झुकेगा।
 लक्ष्य प्राप्ति से पूर्व न सृजन कारवाँ कभी रुकेगा॥
 ज्योति रहे जगमग जगती पर अरुण लालिमा छाई।
 दृढ़ता की परिचायक इसको थामे सबल कलाई॥

क्रूर प्रथाएँ



जिसे कसे हैं क्रूर प्रथाओं की निर्मम जंजीर।
ओ निष्ठुर पहचानो अब तो मानवता की पीर॥

खून पसीना कर मुश्किल से भरता कोई पेट।
पालन पोषण में कन्या के सहता सभी चपेट॥
लेकिन कन्या जब हो जाती है विवाह के योग्य।
बिन दहेज की कन्या को ठहराते सभी अयोग्य॥
तब दहेज की निर्मम माँगें देती छाती चीर। ओ निष्ठुर०

असमय समय बने कोई भी अगर मृत्यु का ग्रास।
तो उसके घर को कस लेता मृतक भोज का पाश॥
एक ओर होती रहती है आँसू की बरसात।
और दूसरी ओर बैठती मृतक भोज की पाँत॥
गिद्ध जुटे हों मरी लाश पर, कौन बँधाए धीर। ओ निष्ठुर०

स्वार्थ सिद्धि के लिए चढ़ाते देवी को बलिदान।
बेचारे पशु की बिसात क्या चढ़ जाते इन्सान॥
यह कैसी विडंबना कैसा देवों का अपमान ?
अगर नियंता एक, जीव सब जग के एक समान॥
माँ की आँखों से तो बहते आँसू छाती चीर। ओ निष्ठुर०

क्रूर प्रथा के दुष्परिणामों पर तो करें विचार।
मानव ने अपने विवेक को क्यों कर दिया बिसार॥
कन्याओं, मृतकों, पशुओं की पीड़ा रही पुकार।
महावीर का और बुद्ध का याद करो प्रतिकार॥

युग प्रज्ञा करती गुहार अब पीटो नहीं लकीर।
ओ निष्ठुर पहचानो अब तो मानवता की पीर॥

—मंगल विजय

नारी आह्वान



सुनो नारियो भारत माता तुमको रही पुकार।
 भारत-माँ का सुंदर सपना, करो तुम्हीं साकार॥
 उच्छृंखल हो रहे मनुज से, अब समाज है ऊँचा।
 आज देश का कोना-कोना है, चिंता में डूबा॥
 अनुशासन से हीन हो रहा, सारा देश हमारा।
 इस बीमारी ने अब तो है, रूप भयंकर धारा॥
 अब अनुशासित, सम्य पीढ़ियाँ तुम्हीं करो तैयार। भारत माँ०
 तुम्हीं प्रथम गुरु हो इनको फिर अनुशासन सिखलाओ।
 अपने चिंतन से, चरित्र से, नैतिक इन्हें बनाओ॥
 भावी कर्णधार हमारे अगर सदाचारी हों।
 तभी समस्याएँ समाज की, समाधान सारी हों॥
 'सदाचार' है व्यक्ति, राष्ट्र की उन्नति का आधार। भारत माँ०
 अपने सेवा भाव, स्नेह से, वह परिवार बनाओ।
 जिससे राष्ट्र भक्ति से प्रेरित, परिजन तुम दे पाओ॥
 हाथ बँटाओ निर्माणों में, यहीं सृजन की बेला।
 राष्ट्र सृजन में लगा रहे क्यों, नर ही आज अकेला॥
 अपने कर्तव्यों को जानों, पहिचानों अधिकार। भारत-माँ०
 बिना भावनाओं के, कोई प्रतिभा काम न आती।
 नारी ही है, जो पौरुष का सोया-भाव जगाती॥
 आने वाले युग का अब तो, सृजन करेगी नारी।
 भारत माता के मंदिर की, भावों भरी पुजारी॥
 क्योंकि वही है समता, ममता, करुणा की आगार। भारत-माँ०

—मंगल विजय

नारी तुम्हीं शक्ति राष्ट्र की



शक्ति-साधना बिना, न बनता कोई बिगड़ा काम।
 नारी ! तुम हो शक्ति राष्ट्र की, शत्-शत् तुम्हें प्रणाम॥
 महादेव शिव ने जगहित है आदि शक्ति को साधा।
 बने 'अर्द्धनारीश्वर' जिसमें रूप तुम्हारा आधा॥
 देवों को, जब-जब असुरों ने छेड़ा और सताया।
 तब देवों को भी विपदा में, ध्यान तुम्हारा आया॥
 तब दुर्गा बनकर तुमने ही जीते वे संग्राम॥ नारी०
 वीर शिवा भी तो माँ से प्रेरित हो आए आगे।
 रिपु भी टिक न सके थे जिनकी प्राण शक्ति के आगे॥
 झाँसी की रानी बन तुमने, जब तलवार चलायी।
 अँग्रेजों जैसे शासक की, छाती थी थर्रायी॥
 है 'प्रभात' उत्साह तुम्हारा, उदासीनता 'शाम'। नारी०
 घर, परिवार, राष्ट्र की दुर्गति, तुम्हें निहार रही है।
 युग-युग से पीड़ित-मानवता, तुम्हें पुकार रही है॥
 किंतु उपेक्षा, उदासीनता, देख तुम्हारी नारी।
 मानवता छटपटा उठी है, मन में पीड़ा भारी॥
 आधी-आबादी की मूर्छा का, यह है परिणाम। नारी०
 शक्ति न जागी तो शिव कैसे दुष्ट अशिव को तोड़े।
 ध्वंस हुआ हावी मानव को कौन सृजन से जोड़े॥
 रुका हुआ हर क्षेत्र-प्रगति का, लंगड़ाई सी गति है।
 बिना तुम्हारे रुकी-रुकी-सी, नर की सभी प्रगति है॥
 शक्ति न जागी अगर राष्ट्र की, होगा क्या अँजाम।
 नारी ! तुम हो शक्ति राष्ट्र की, शत्-शत् तुम्हें प्रणाम॥

—मंगल विजय

ओ नारी कल्याणी



बहुत सो चुकी अब तो जागो ओ नारी कल्याणी।
 परिवर्तन के स्वर में भर दो, निज गौरव की वाणी॥
 बन कौशल्या आज देश को फिर से राम महान दो।
 और सुनैना बन कर फिर से, सीता सी संतान दो॥
 वीर जननि हो तुम संतानें अर्जुन भीम समान दो।
 भारत माता माँग रही है वापस उसकी शान दो॥
 केवल तुम ही बन सकती है नूतन युग निर्माणी॥ बहुत०
 मार्ग भ्रमित जितने तुलसी हैं, सबको दो ललकार।
 रत्नावली तुम्हारा गौरव तुमको रहा पुकार॥
 कालीदास सम सोयी प्रतिभा सकती तुम्हीं निखार।
 महानता की देवी तुमको जगती रही निहार॥
 बनो प्रेरणा, राह देखता जग का प्राणी-प्राणी। बहुत०
 जीजा वाई बनो देश को वीर शिवा की है फिर चाह।
 सिवा तुम्हारे कौन बताए बलिदानी वीरों को राह॥
 जागो अब तो मत होने दो तुम मानवता को गुमराह।
 वह जौहर दिखलाओ जग के मुख से बरबस निकले वाह॥
 नई सदी की नींव तुम्हीं को तो अब है रखवानी। बहुत०
 बनो अहिल्याबाई अपनी आत्मशक्ति फिर दिखलाओ।
 लक्ष्मीबाई बन अनीति का, गर्व चूर कर बतलाओ॥
 दुर्गावती बनो शासन की डोर थामने आ जाओ।
 सावित्री बन सत्यवान को यम से पुनः छुड़ा लाओ॥
 रच दो अपनी गौरव गरिमा की फिर नई कहानी। बहुत०
 —सुरभि कुलश्रेष्ठ

नारी का समर्पण



पुरुषो ! नारी की ममता की नापो तो गहराई।
अपना हृदय गला कर भी, उसने रसधार बहाई॥

जिसे कह दिया 'अपना' उसको फिर आजन्म निभाया।
न्यौछावर कर दिया सभी कुछ, भी नहीं बचाया॥
तन की क्या है बात ? समर्पित की मन की इच्छाएँ।
आत्मा तक कह उठो, कि "अगले जन्म तुम्हें फिर पाएँ"॥
दिव्य भावना की प्रतिमा ही, है नारी बन आई॥

किया वही, जिसके प्रति तुमको, आकर्षित भी जाना।
अपने सुख को उसने हरदम तुमसे पीछे माना॥
तुम्हें खिलाकर ही उसने खुद-सदा बाद में खाया।
शयन बाद में उठना पहले यह नित-नियम बनाया॥
धरती पर ही सृष्टि स्वर्ग की, उसने सहज रचाई॥

तुम्हें उदास तनिक भी देखा, अकुलाया उसका मन।
हँसी तुम्हारी अक्षय करने लगा दिया सब जीवन॥
तुम्हें प्रसन्न देखना ही तो, उसका जीवन-व्रत है।
तब हित साधन हो तो, उसका प्राण तलक प्रस्तुत है॥
यह साकार त्याग की मूरत, विधि ने एक बनाई॥

कभी तुम्हें मुस्कानें दी, उसने आँसू पी-पीकर।
कभी तुम्हें सुख-सुविधा दी अपने घावों को सीकर॥
कभी 'सहचरी' कभी 'अनुचरी' उसने खुद को माना।
बिना तुम्हारे उसने जग का, कोई सुख कब जाना ?
नारी ने इस आत्म-समर्पण की कीमत कब पाई ?
पुरुषो ! नारी की ममता की, नापो तो गहराई॥

—माया वर्मा

उठो सूर्य की तरह



उगो सूर्य की तरह, गगन पर बन प्रकाश छा जाओ।
और अँधेरा इस जगती का, जल कर स्वयं मिटाओ॥

मंद हवा बनकर बाँटो नव प्राण थकी साँसों को।
फूलों सी मुस्कान बनो ले आओ मधुमासो को॥
बन अषाढ़ के मेघ, भिगो दो, सूखी धरती का तन।
जिससे नव उल्लास जगे भर उठे मोद में कण-कण॥
जन-जन को जागृति का सुखकर संदेशा दे जाओ। उगो०

बनो सुशीतल छाया तरु की, भ्रांति पथिक की हर लो।
औरों को उल्लास बाँटकर, जीवन सार्थक कर लो॥
सरिता बन कर बहो, प्राण भरने दाने-दाने में।
देने में जो खुशी अरे ! वह रखी कहाँ पाने में॥
सतत् समर्पण द्वारा, सरिता से सागर बन जाओ। उगो०

विश्वहितों में पर्वत से दृढ़, शुभ संकल्प करो तुम।
निर्झर बन कर प्यास बुझाने को अनवरत झरो तुम॥
राह दिखाओ सदा दूसरों को बनकर ध्रुवतारा।
पड़े रेशनी बनकर धरती पर प्रतिविम्ब तुम्हारा॥
बन ऊषा की लाली, जन-जन के मन कमल खिलाओ। उगो०

हृदय बनाओ अपना, जैसा विस्तृत नील गगन है।
सहनशील बन जाओ, जैसा धरती का आँगन है॥
सागर बनकर रत्न राशि बाँटो, श्रमशील मनुज को।
बनो ओस के कण-नम कर दो दिन की तपती रज को॥
शशि बन, निशि में भी पथिकों के हित प्रकाश फैलाओ।
उगो सूर्य की तरह गगन पर बन प्रकाश छा जाओ॥

—माया वर्मा

दिव्य शक्ति की धारा



उत्तर से आ रही निरंतर दिव्य शक्ति की धारा।
फिर क्यों साहस टूट रहा है, पथ के बीच तुम्हारा॥

नूतन युग निर्माण हो रहा तुम उसके सेनानी।
नई सभ्यता नई संस्कृति तुमको आज बनानी॥
ममतामय मानव की पावन नींव नई गढ़ना है।
रुके नहीं पग, सतत अथक, बस आगे ही बढ़ना है॥
होना है नव सृजन विश्व का बंधु तुम्हारे द्वारा। उत्तर०

ईश्वर की इच्छा है ऐसी अब तो युग बदलेगा।
छोड़ अनीति अनय मानव, सत्पथ की ओर चलेगा।
किंतु तुम्हें इस परिवर्तन का माध्यम बनना होगा।
लाकर क्रांति विचारों में—नव मानस रचना होगा॥
अतः उठो दुष्प्रवृत्तियों से दो जग को छुटकारा। उत्तर०

अंतर में विश्वास लिए तुम आगे बढ़ते जाओ।
मिले फूल या काँटे लेकिन पग पीछे न हटाओ॥
माना होगी चुभन किंतु—संतोष इसी में होगा।
सतत लक्ष्य तक चलने, का परितोष उसी में होगा॥
क्लांत निराशा सा यदि होगा, मानस कभी तुम्हारा।
आशा और उल्लास मिलेंगे, बनकर सुदृढ़ सहारा॥
उत्तर से आ रही निरंतर दिव्य शक्ति की धारा।
फिर क्यों साहस टूट रहा है, पथ के बीच तुम्हारा॥

—ब्रह्मवर्चस

आएगा अब नया उजाला

चहक रहे धरती के पंछी, महक रहा आकाश है,
आएगा अब नया उजाला, यह हमको विश्वास है।

सिमट रहा अज्ञान अँधेरा।

उजड़ गया असुरों का डेरा॥

जाग उठी कर्मठ तरुणाई।

शक्ति नई कण-कण ने पाई॥

बीत गई पतझड़ की रजनी, द्वार खड़ा मधुमास है। आएगा०

मन मंदिर को स्वच्छ बनाएँ।

सद्विचार के पुष्प सजाएँ॥

प्रेम एकता, भाईचारा।

गूँजे नव रचना का नारा॥

जहाँ सुमति है वहीं प्रगति है, वहीं सिद्धि का वास है। आएगा०

युग दृष्टा की निर्मल वाणी।

राह दिखाती है कल्याणी॥

फैला युग संगीत पवन में।

भरता भव्य भाव जन-जन में॥

ललित कला के मंगल घट में, संस्कृति का उल्लास है। आएगा०

अब न यहाँ अन्याय टिकेगा।

नहीं शील-ईमान बिकेगा॥

सदाचार का मान बढ़ेगा।

विश्व प्रगति सोपान चढ़ेगा।

जागृति का अभियान अनोखा बना रहा इतिहास है।

आएगा अब नया उजाला, यह हमको विश्वास है॥

—डॉ. हरगोविंद सिंह

स्वर गूँजे निर्माण के



श्रेष्ठ कर्म के चरण बड़े हैं, धरती पर इंसान के।
 सदियों बाद जगत में अब फिर, स्वर गूँजे निर्माण के॥

धरती अपनी अंबर अपना, सूरज सा हम सब को तपना।
 कर्म-मंत्र जीवन भर जपना, पूरा होगा नव युग-सपना॥
 मंगल घट रखना है घर-घर, प्रेम, त्याग, सद्ज्ञान के।
 सदियों बाद जगत में अब फिर, स्वर गूँजे निर्माण के॥

संकल्पों ने ली अँगड़ाई जागी आत्मज्ञान तरुणाई।
 नए सृजन की बेला आई, झूम उठी आशा अमराई॥
 खुलते जाते नए क्षितिज अब, ज्ञान और विज्ञान के।
 सदियों बाद जगत में अब फिर, स्वर गूँजे निर्माण के॥

श्रम-संयम का सौरभ उड़ता, दूर हुई जीवन की जड़ता।
 लेकर ज्ञान मशाल हाथ में, मिला कदम से कदम साथ में॥
 जन-जन बंद कपाट खोलते, अंधकार-अज्ञान के।
 सदियों बाद जगत में अब फिर, स्वर गूँजे निर्माण के॥

ऊँच-नीच का रहा न अंतर, करनी-कथनी एक बराबर।
 पंथ अनेक, एक हैं मंजिल, कण-कण में बसता प्रभु अविकल॥
 फूट रहे हैं अभिनव अंकुर, भक्तिभाव-सद्ज्ञान के।
 सदियों बाद जगत में अब फिर, स्वर गूँजे निर्माण के॥

आदर्शों की फसल न सूखे, रहे न जग में कोई भूखे।
 समता भाव हृदय में जागे, गले लगाएँ बढ़कर आगे॥
 परहित में जो अर्पित रहता, वही निकट भगवान के।
 सदियों बाद जगत में अब फिर, स्वर गूँजे निर्माण के॥

—बाबूलाल जैन 'जलज'

युग-युग से हम खोज रहे हैं



युग-युग से हम खोज रहे हैं, सुरपुर के भगवान को।
किंतु न खोजा अब तक हमने, धरती के इंसान को॥

चर्चा ब्रह्म ज्ञान की करते, किंतु पाप से तनिक न डरते।
राम-नाम जपते हैं दुःख में, साथी हैं रावण के सुख में॥
प्रतिमाएँ रचकर देवों की, पूजा है पाषाण को।
किंतु न पूजा अब तक हमने, धरती के इंसान को॥

शबरी-केवट के गुण गाए, खूब रीझकर अश्रु बहाये।
पर जब हरि को भोग चढ़ाया, तब सब को दुत्कार भगाया॥
तिलक लगाकर अपने उर में, पाला है शैतान को।
किंतु न पाला अब तक हमने, धरती के इंसान को॥

खोजे मंदिर-मस्जिद-गिरजे, अनगिनते परमेश्वर सिरजे।
किंतु कभी ईमान न खोजा, कभी खेत-खलिहान न खोजा॥
दुनियाँ के मेले में देखा, नित्य नये सामान को।
किंतु न देखा अब तक हमने, धरती के इंसान को॥

खोजा हमने जिसे भजन में, छिपा रहा वह तो क्रंदन में।
हमने निशि-दिन धर्म बखाना, लेकिन कर्म नहीं पहचाना॥
पैसा पाया, प्रतिभा पाई, पाया है विज्ञान को।
किंतु न पाया, अब तक हमने, धरती के इंसान को॥

युग-युग से हम खोज रहे हैं, सुरपुर के भगवान को।
किंतु न खोजा अब तक हमने, धरती के इंसान को॥

—डॉ. हरगोविंद सिंह

भूली हुई कहानी



ऋषियों के तप-त्याग-तेज-गुण, मानव धर्म महान की।
भूली हुई कहानी फिर से, याद करो बलिदान की॥

जिस धरती को धर्म का सूरज देता सदा प्रकाश है।
जिस धरती को कर्म और कौशल, पर ही विश्वास है॥
जहाँ गुणों का सद्भावों का, हरदम रहा निवास है।
जिस धरती ने मानवता की, फैलायी मृदुहास है॥

वह है भारत वर्ष कि जिसने, ज्योति जगाई ज्ञान की।
भूली हुई कहानी फिर से, याद करो बलिदान की॥

मुनि वशिष्ठ ने, परशुराम ने, राजतंत्र का गठन किया।
विश्वामित्र, भगीरथ ने था, नई सृष्टि का सृजन किया॥
ऋषि-मुनियों ने, ज्ञान दान हित, सारे जग में भ्रमण किया।
विश्व-वंद्य कहलाए, इनको सारे जग ने नमन किया॥

वही भूमिका फिर बनती है, ऋषियों की संतान की।
भूली हुई कहानी फिर से, याद करो बलिदान की॥

हम भी पूत उसी जननी के, आज हमारी है बारी।
करना है कल्याण विश्व का, आज करें वह तैयारी॥
नए सृजन के लिए बड़ें अब, शक्ति झोंक दें हम सारी।
ज्वाला बनकर धधक उठे यह, नए सृजन की चिनगारी॥

हमको ही लिखनी है फिर से, कथा नए निर्माण की।
भूली हुई कहानी फिर से, याद करो बलिदान की॥

—बलराम सिंह परिहार

नया सबेरा—नया उजाला



स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन अपना, सभ्य समाज बनाएँगे।
 नया सबेरा नया उजाला, इस धरती पर लाएँगे॥
 वेला आई नए सृजन की, नयी उमंगें ले जीवन की।
 सोने वाले पछताएँगे, बढ़ने वाले यश पाएँगे॥
 युग साधक बन तन-मन-धन से, हम युग-धर्म निभाएँगे॥ नया०
 यह शरीर मंदिर है प्रभु का, यह अणु में प्रमाण है विभु का।
 इसे असंयम सता न पाएँ, संयम स्वस्थ-बलिष्ठ बनाएँ॥
 नवयुग के अनुरूप श्रेष्ठ हम, निज अभ्यास बनाएँगे॥ नया०
 मन ही शत्रु, मित्र भी मन है, इस पर आधारित जीवन है।
 भव-बंधन मन का विकार है, मुक्ति मनो का संस्कार है॥
 मन ही सच्चा आसन प्रभु का, इसको स्वच्छ बनाएँगे॥ नया०
 नवयुग श्रेष्ठ समाज रचेगा, प्रेम-क्षेम-सहकार बढ़ेगा।
 मूढ़ रुढ़िया हम तोड़ेंगे, संस्कृति सूत्रों को जोड़ेंगे॥
 सतयुग जैसे शुभ समाज को फिर साकार बनाएँगे॥
 नया सबेरा नया उजाला इस धरती पर लाएँगे॥

—ब्रह्मवर्चस्

चलना सिखा दिया है



चलना सिखा दिया है, गलना सिखा दिया है।
घनघोर आँधियों में, जलना सिखा दिया है॥

हमको मिला हुआ है, गुरुदेव का महाबल।
माँ ने हमें दिया है, अपना पुनीत आँचल॥
इस प्यार के सहारे, ढलना सिखा दिया है।
घनघोर आँधियों में, जलना सिखा दिया है॥

सुख-दुःख यहाँ है दोनों, मैदान और दल-दल।
संसार एक पथ है, जिसमें न फूल केवल॥
काँटों भरी डगर में, चलना सिखा दिया है।
घनघोर आँधियों में, जलना सिखा दिया है॥

चारों तरफ पड़ें हैं, छल-बल पड़ाव डाले।
आस्तीन में छिपे हैं, अपने ही नाग काले॥
उनकी चुनौतियों को, दलना सिखा दिया है।
घनघोर आँधियों में, जलना सिखा दिया है॥

फूलों की सेज के तो, इच्छुक सभी यहाँ पर।
लेकिन प्रकाश के कण, दिखते नहीं कहीं पर॥
भीषण अभाव में भी, पलना सिखा दिया है।
घनघोर आँधियों में, जलना सिखा दिया है॥

साधन भरे पड़े हैं, पर साधना नहीं है।
भगवान तो वही हैं, आराधना नहीं है॥
अपनी उपासना को, फलना सिखा दिया है।
घनघोर आँधियों में, जलना सिखा दिया है॥

—बलराम सिंह परिहार

राम भक्ति श्रद्धा निखारती है



श्री राम भक्ति ऐसी, श्रद्धा उभारती है।
निष्काम भाव शबरी, ऋषि-पथ बुहारती है॥

गाये जटायु ने, थे, कब भक्ति के तराने।
श्री राम को गिलहरी, पहुँची न जल चढ़ाने॥
पर भक्ति भावना से, जीवन सँवारती है।
निष्काम भाव शबरी, ऋषि-पथ बुहारती है॥

हनुमान भक्त केवल, माला घुमा न पाए।
श्री राम को पुजापा, केवट चढ़ा न पाए॥
इनका चरित्र पावन, प्रतिभा-निखारती है।
निष्काम भाव शबरी है, ऋषि-पथ बुहारती है॥

बारह बरस जगे तब, लक्ष्मण में शक्ति आई।
शासक भरत बने पर, आसक्ति छू न पाई॥
तब श्रेष्ठ भक्त दुनियाँ, इनको पुकारती है।
निष्काम भाव शबरी, ऋषि-पथ बुहारती है॥

यदि भक्त हम कहाँ, तो श्रेष्ठ काम करना।
श्री राम काज करना, अन्याय से न डरना॥
युग धर्म को निभाने, प्रज्ञा पुकारती है।
निष्काम भाव शबरी, ऋषि-पथ बुहारती है॥

—मंगल विजय.

देवत्व को बचाने



देवत्व को बचाने, संघर्ष भी किए हैं।
हमने दधीचि बनकर, निज प्राण तक दिए हैं॥

अज्ञान के तिमिर में, जब जग भटक रहा था।
विज्ञान की प्रगति का, पहिया अटक रहा था॥
तब ज्ञान के दिवाकर, हमने उगा दिए हैं।
हमने दधीचि बनकर, निज प्राण तक दिए हैं॥

संस्कृति महान अपनी, थे विश्व के गुरु हम।
रुकता जहाँ जमाना, होते वहाँ शुरु हम॥
अपने लिए न केवल, जग के लिए जिए हैं।
हमने दधीचि बनकर, निज प्राण तक दिए हैं॥

भूलें न आत्मगौरव, की उस परंपरा को।
वंजर नहीं बनाएँ, रत्नों की उर्वरा को॥
भगवान आ गए तो, हनुमान भी दिए हैं।
हमने दधीचि बनकर, निज प्राण तक दिए हैं॥

विकृत-विचार विष से, फिर जल रही मनुजता।
देवत्व डर रहा है, खुश हो रही दनुजता॥
संसार को बचाने, शिव बन जहर पिए हैं।
हमने दधीचि बनकर, निज प्राण तक दिए हैं॥

फिर से मनुज हृदय में, देवत्व हम भरेंगे।
फिर स्वर्ग इस घरा पर, हम अवतरित करेंगे॥
साहस नहीं मरेगा, संजीवनी पिए हैं।
हमने दधीचि बनकर, निज प्राण तक दिए हैं॥

—मंगल विजय

पुरुषार्थ की कहानी



पुरुषार्थ की कहानी, इतिहास गा रहा है।

सूरज सुना रहा है, चंदा बता रहा है॥

उद्योग जब हुए हैं, संभव हुआ तभी कुछ।

जब भी प्रमाद छाया, पाया नहीं कभी कुछ॥

भागीरथी परिश्रम, गंगा बहा रहा है। सूरज०॥

राणा प्रताप क्या थे ? पुरुषार्थ की कहानी।

गीता सुना रही है, अपनी पुनीत वाणी॥

पुरुषराज का पराक्रम, फिर याद आ रहा है। सूरज०॥

है वीरता अगर तो, अपने से जूझना है।

उलझी हुई पहली, खुद ही तो बूझना है॥

था बुद्ध का पराक्रम, जो रंग ला रहा है। सूरज०॥

हम आत्महीनता वश, भूले हैं शक्तियों को।

त्यागा प्रमाद में पड़, उद्योग वृत्तियों को॥

सौभाग्य की जगह क्यों, दुर्भाग्य छा रहा है। सूरज०॥

युग शक्ति ने निमंत्रण, भेजा पराक्रमी को।

तम-तोम को मिटाने, जीवंत उद्यमी को॥

रवि ज्ञान का उगाओ, अज्ञान छा रहा है। सूरज०॥

पीड़ित हुई मनुजता, संस्कृति सिसक रही है।

फिर क्यों मनीषियों की, प्रज्ञा हिचक रही है॥

मनु पुत्र निज-पराक्रम, क्यों कर लजा रहा है।

सूरज सुना रहा है, चंदा बता रहा है॥

—मंगल विजय

संग्राम जिंदगी है



संग्राम जिंदगी है, लड़ना उसे पड़ेगा।
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा॥

इतिहास कुछ नहीं है, संघर्ष की कहानी।
राणा, शिवा, भगत सिंह, झाँसी की वीर रानी॥
कोई भी कायरों का, इतिहास क्यों पड़ेगा ?
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा॥

घेरा समाज को है, भीषण कुरीतियों ने।
व्यसनों ने रूढ़ियों ने, निर्मम, अनीतियों ने॥
इनकी चुनौतियों से, है कौन जो भिड़ेगा ?
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा॥

चिंतन-चरित्र में अब, विकृति बढ़ी हुई है।
चहुँ ओर कौरवों की, सेना खड़ी हुई है॥
क्या पार्थ इन क्षणों भी, भ्रम में पड़ा रहेगा ?
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा॥

आओ ! लड़ें स्वयं के, दोषों से, दुर्गुणों से।
भोगों से, वासना से, रोगों से, राक्षसों से॥
कुंदन वही बनेगा, जो आग पर चढ़ेगा।
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा॥

—मंगल विजय

हे नाथ दो सहारा



हम मोड़ने चले हैं, युग की प्रचंड धारा।

हम लड़खड़ा न जाएँ, हे नाथ दो सहारा॥

दुष्प्रतियौ बढी हैं, उनको उखाड़ना है।

छल कंस कर रहा है, उसको पछाड़ना है॥

स्वारथ की बस्तियों को, अब तो उजाड़ना है।

फिर व्यूह कौरवों का, हमको बिगाड़ना है॥

मिट जाए फिर असुरता, यह लक्ष्य है हमारा।

गिरते हैं उठते-उठते हे नाथ दो सहारा॥

हम कर्म खुद करेंगे, पर आन माँगते हैं।

हम गीत खुद रचेंगे, पर तान माँगते हैं॥

भगवान तुमसे हम कब ? वरदान माँगते हैं।

बस एक सद्-असद् की पहचान माँगते हैं॥

पर है तभी यह संभव, आशीष हो तुम्हारा।

गिरते हैं उठते-उठते, हे नाथ दो सहारा॥

निर्देश हो तुम्हारा, पुरुषार्थ हम करेंगे।

संदेश प्रभु तुम्हारा, सबसे कहा करेंगे॥

आस्था जगे सभी में, अभियान वह रचेंगे।

कर्तव्य-मार्ग पर हम, बलिदान भी करेंगे॥

‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’ उद्देश्य है हमारा।

गिरते हैं उठते-उठते, हे नाथ दो सहारा॥

—अज्ञात

क्यों मोह है उन्हीं से



क्यों मोह है उन्हीं से, जिनने हमें मिटाया।

घोंटा गला जिन्होंने, उनको गले लगाया॥

घातक-कुरीतियों ने, क्या कुछ नहीं किया है ?

उन क्रूर-रुद्धियों ने, बरबाद कर दिया है॥

क्या बात है कि उनसे, पीछा नहीं छुड़ाया।

घोंटा गला जिन्होंने, उनको गले लगाया॥

क्यों कर फिजूलखर्ची, करते हैं शादियों में ?

क्यों मोल-भाव 'वर' के, बढ़ते हैं शादियों में ?

पुरुषार्थ के धनी को, क्यों माँगना सिखाया ?

घोंटा गला जिन्होंने, उनको गले लगाया॥

क्या 'मृतक-भोज' मरने, पर काम आ सकेगा ?

क्या भोज 'कर्मफल' से, उसको बचा सकेगा ?

परिवार रो रहा हो, तब जाए कैसे खाया ?

घोंटा गला, जिन्होंने, उनको गले लगाया॥

आडंबरों में हम क्यों, जकड़े पड़े हुए हैं ?

क्यों अंध-मान्यता के, झगड़े खड़े हुए हैं ?

अज्ञान में पड़े क्यों, क्यों ज्ञान को भुलाया ?

घोंटा गला जिन्होंने, उनको गले लगाया॥

हमको मिटा रहे जो, उनको चलो मिटाएँ।

छोड़ें कुरीतियों को, बरबादियाँ बचाएँ॥

हमको 'विवेक' ने अब, सन्मार्ग है बताया।

क्यों मोह है उन्हीं से, जिनने हमें मिटाया ?

—मंगल विजय

व्यक्तित्व गढ़ना हमें पड़ेगा



व्यक्तित्व को हमारे, गढ़ना हमें पड़ेगा।

सोपान साधना के, चढ़ना हमें पड़ेगा॥

हैं फूल वृक्ष पर जो, नभ से नहीं टपकते।

वरदान से किसी के, फल भी नहीं लटकते॥

बस वृक्ष की जड़ें ही, रस खींचती धरा से।

पाती सशक्त-जड़ ही, फल-फूल उर्वरा से॥

व्यक्तित्व की जड़ों तक, बढ़ना हमें पड़ेगा। सोपान०॥

अंदर छिपा हुआ जो, जीवंत देवता है।

वह शक्ति का खजाना, इसका जिसे पता है॥

वह सिद्धियाँ सँजोता, है आत्म साधना से।

मिलता अकूत-बल है, जिसकी उपासना से॥

साधक समान, पीछे, पड़ना हमें पड़ेगा। सोपान०॥

हम पर कषाय-कल्मष का, आवरण पड़ा है।

अंगार में परत बस, इस राख का चढ़ा है॥

जब आत्म साधना से, प्राणाग्नि जागती है।

अज्ञान की अँधेरी, तत्काल भागती है॥

प्रज्ञा-प्रकाश-पथ पर, बढ़ना हमें पड़ेगा। सोपान०॥

व्यक्तित्व कर परिष्कृत, चुम्बक उसे बनाएँ।

फिर दिव्य शक्तियों के, अनुदान खींच लाएँ॥

सोया हुआ हृदय का, देवत्व हम जगाएँ।

अपनी वसुंधरा को, फिर स्वर्ग सा सजाएँ॥

व्यक्तित्व का नगीना, जड़ना हमें पड़ेगा।

सोपान साधना के चढ़ना हमें पड़ेगा॥

—मंगल विजय

क्यों और को पुकारें



जीवन के देवता को, आओ तनिक सँवारें।

प्रत्यक्ष देवता है, क्यों और को पुकारें ?

हैं आत्म-बोध होता, इसकी उपासना से।

जीवन महान बनता, अविराम साधना से॥

कर साधना इसी की देवत्व को निखारें।

प्रत्यक्ष देवता है, क्यों और को पुकारें ?

सबसे समीप हैं यह, जाना नहीं कहीं पर।

है शक्ति-स्रोत अद्भुत, हैं तीर्थ सब यहीं पर॥

होंगे विराट् दर्शन, निज रूप तो निहारें।

प्रत्यक्ष देवता है, क्यों और को पुकारें ?

है यह शरीर मंदिर, हो शुद्धता वहाँ पर।

विश्वास आस्था के, हो देवता जहाँ पर॥

सद्भाव और सद्गुण, की आरती उतारें।

प्रत्यक्ष-देवता है, क्यों और को पुकारें ?

वरदान चाहिए तो, वरदान भी मिलेंगे।

अनुदान भी मिलेंगे, भगवान भी मिलेंगे॥

चिंतन, चरित्र में हम, यदि श्रेष्ठता उभारें।

प्रत्यक्ष देवता है, क्यों और को पुकारें ?

अवतार कुछ अगर है, इस देव की कृपा है।

जीवन के देवता ने, इतिहास को सृजा है॥

इस देवता के ऊपर, सब सिद्धियाँ निसारें।

प्रत्यक्ष देवता है, क्यों और को पुकारें ?

—मंगल विजय

तुम प्रीति रूप हो माँ



तुम प्रीति रूप हो माँ, परतीति रूप हो माँ।
तुम वेद की ऋचा हो, संगीत रूप हो माँ॥

माँ हारकर तुम्हें ही, मन की व्यथा पुकारे।
छलती रहोगी कब तक, माया स्वरूप धारे॥
तुम हो पुकार में भी, आकुल गुहार में भी।
बजते हृदय स्वरों के, हर तार-तार में भी॥

तुम हार में समाई, तुम जीत रूप हो माँ।
तुम हो उछाह उर में, हर गीत रूप हो माँ॥ तुम०॥

हर, कर्म-हास-रोदन, चिंतन मनन तुम्हीं हो।
क्रंदन, कसक कला में, पूजन-भजन, तुम्हीं हो॥
हर रूप में जगत में, माँ भास हो तुम्हारा।
हर हास-त्रास में माँ, विश्वास हो तुम्हारा॥

तुम ध्यान रूप हो माँ, गुरु-ज्ञान रूप हो माँ।
तुम सिद्धि साधना में, उत्थान रूप हो माँ॥ तुम०॥

अभिशाप ताड़ना में, हर यातना में तुम हो।
हर वेदना व्यथा में, आराधना में तुम हो॥
यह जानते हुए भी, पहचानते हुए भी।
हर बार भूलते हैं, सब मानते हुए भी॥
हर मोर सौंझ में तुम, हर याम रूप हो माँ।

हर शीत-ग्रीष्म ऋतु में, हर धाम रूप हो माँ।
तुम प्रीति रूप हो माँ, परतीति रूप हो माँ॥

—लाखन सिंह सोमित्र

युग का नया तराना



बिछुड़े हुए मिलाएँ, सबको गले लगाएँ,
 युग का नया तराना हम, एक साथ गाएँ।
 है जन्म से यहाँ पर, कोई बड़ा न छोटा।
 है जाति-वंश भर से, कोई खरा न खोटा॥
 तब क्यों न हर मनुज को अपना स्वजन बनाएँ। युग का०॥
 होता समाज में है, गुण-कर्म से विभाजन।
 गीता सीखा रही है, सच्चा नियम सनातन॥
 जो हैं दलित युगों से, झुककर उन्हें उठाएँ। युग का०॥
 अलगाव में हमेशा, हम बिखरते रहे हैं।
 होती प्रगति कहाँ से, जब रूढ़ि में बहे हैं ?
 अब क्यों न 'स्वागतम्' हम, सब के लिए सजाएँ ? युग का०॥
 जो थे सगे हमारे, वे बन गए पराए।
 इतिहास कह रहा है, हमने रतन गँवाए॥
 चेतो, अभी समय है, अब फिर न चूक जाएँ। युग का०॥
 झंझट अनार्य अथवा, अब आर्य का कहाँ है ?
 शक-हूण दल सभी का, संगम हुआ यहाँ है॥
 अब क्यों अपन्न हुआ है ? इस व्याधि को मिटाएँ। युग का०॥
 जिसने हमें डसा है, वह नागपाश तोड़ें।
 बसुधा कुटुम्ब हो अब, ऐसा विध न जोड़ें॥
 हम कौन थे, हुए क्या ? यह सब नहीं भुलाएँ।
 युग का नया तराना, हम एक साथ गाएँ॥

—डॉ. हरगोविंद सिंह

मोह रूढ़ियों का हम छोड़ने चले हैं



अब मोह रूढ़ियों का, हम छोड़ने चले हैं।
नाता विवेक-पथ से, हम जोड़ने चले हैं॥

जिनने हमें गिराया, वे हैं कुरीतियाँ ही।
जकड़े रहीं अभी तक, हमको अनीतियाँ ही॥
पर आज हम ये बंधन, झकझोरने चले हैं।

अब मोह रूढ़ियों का, हम छोड़ने चले हैं॥
नाता विवेक-पथ से, हम जोड़ने चले हैं॥

अज्ञान में फँसी थी, यह जिंदगी की धारा।
गंदला हुआ था पानी, दूषित हुआ किनारा॥
उसको भी ज्ञान-पथ पर, हम मोड़ने चले हैं।

अब मोह रूढ़ियों का, हम छोड़ने चले हैं॥
नाता विवेक-पथ से, हम जोड़ने चले हैं॥

जीवन में स्वार्थ, छल का, है द्वेष का प्रदूषण।
मुश्किल हुआ है जीना, जग में अशांति भीषण॥
लेकिन ये सारे काँटे, अब तोड़ने चले हैं।

नाता विवेक-पथ से, हम जोड़ने चले हैं॥
अब मोह रूढ़ियों का, हम छोड़ने चले हैं॥

—माया वर्मा

मुद्रक : युग-निर्माण प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

युग निर्माण मिशन-संक्षिप्त परिचय

उद्देश्य : मनुष्य में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण । व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण । विचारक्रांति, नैतिक क्रांति, धार्मिक क्रांति एवं सामाजिक क्रांति द्वारा जनमानस का भावनात्मक परिष्कार ।

गठन : नव निर्माण के लिए तत्पर नित्य समय दान और अंश दान करने वाले लाखों कर्मनिष्ठों का पारिवारिक संगठन । प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक कार्यक्रमों द्वारा मानवीय गरिमा को उभारने वाली गतिविधियों में संलग्न समुदाय ।

आधार : सदस्यों का दैनिक श्रमदान एवं अंशदान । नित्य ५० पैसा और २ घण्टे समय का नियमित अनुदान । इसी सामर्थ्य के बलबूते अनेकों महत्वपूर्ण गतिविधियों का गत ५० वर्षों से संचालन ।

प्रमुख संस्थान : (१) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (२) अखण्ड ज्योति कार्यालय, मथुरा (३) गायत्री शक्तिपीठ, आंवलखेड़ा, आगरा (४) शांतिकुंज, हरिद्वार (५) ब्रह्मवर्चस्, हरिद्वार । भारत एवं विदेश में लगभग ४००० शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ एवं गायत्री परिवार की शाखाओं द्वारा प्रचार प्रसार ।

प्रकाशन : युग निर्माण योजना (हिन्दी मासिक), युग शक्ति गायत्री (गुजराती मासिक), अखण्ड ज्योति मासिक एवं अन्य कई पत्रिकाएं भारत की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित । विभिन्न विषयों पर पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित लगभग ५०० पुस्तकों का प्रकाशन देश की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में ।

गतिविधियां एवं प्रचार : धर्म तंत्र से लोकशिक्षण, अग्नि साक्षी में सत्प्रवृत्तियां अपनाने के संकल्प युग निर्माण विद्यालय, मथुरा, नौ दिवसीय साधना सत्र एवं एक मासीय युग शिल्पी सत्रों का नियमित आयोजन । टोलियों द्वारा देश-विदेश में मिशन का प्रचार-प्रसार । कार्यक्षेत्र : समस्त भारतवर्ष एवं विश्व ।

मूल्य-३ रुपया